अध्याय 2

रागों का शास्त्रीय वर्णन

राग यमन

दोहा–

शुद्व सुरन के संग जबमध्यम तीवर होय।
ग नि वादी– संवादि ते,यमन कहत सब कोय।।
तथा
सबही तीवर सुर जहॉवादी गंधार सुहाय।
अरू संवाद निखादतेईमन राग कहाय।।
–रागचन्द्रिका सार

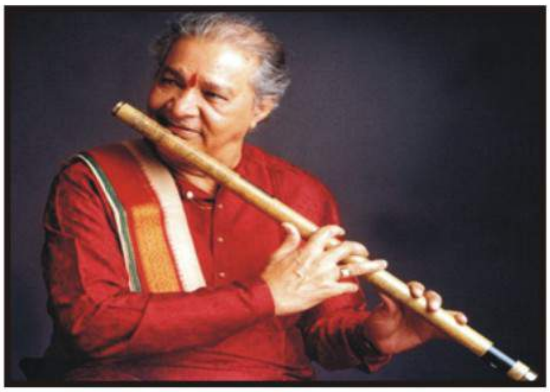

पं. हरिप्रसाद चौरसिया
बांसुरी वादक

राग का शास्त्रीय विवरण

राग यमन की रचना कल्याण थाट से मानी गई है, इसमें तीव्र मध्यम तथा अन्य स्वर शुद्व प्रयोग किये जाते है।

इस राग का वादी स्वर ग (गंधार) तथा संवादी स्वर नि (निषाद) है।

इस राग की जाति सम्पूर्ण है। इसके आरोह व अवरोह में सातों स्वर प्रयोग में आते है। इस राग के गायन–वादन का समय रात्रि का प्रथम प्रहर है।

यह कल्याण थाट का राग है, अतः इसे आश्रय राग भी कहा जाता है।

राग की विशेषताएँ :

1. कल्याण राग की विशेषता यह भी है कि इस राग के अनेंक नाम प्रचलित है जैसे – कल्याण, ईमन, एमन तथा यमन।
2. इस राग की चलन में मन्द्र नि से जैसे नि़ रे ग रे, नि़ रे ग म प आदि स्वर संगति की अधिकता रहती है।
3. यह कि अत्यन्त मधुर राग है तथा नये विद्यार्थियों के लिये सरल एवं सहज है।
4. इसमें कभी– कभी शुद्व मध्यम का प्रयोग विवादी स्वर के नाते कर दिया जाता है, तब कुछ लोग इसे यमन कल्याण कहते है।
5. यह गंभीर प्रकृति का राग है।
6. गंधार स्वर वादी होनें के कारण यह राग पूर्वांग वादी है।

आरोह – सा रे ग, म॑ प, ध, नि सां । अथवा

नि रे ग म॑, प ध, नि सां।

अवरोह – सां नि ध, प, म॑, ग, रे, सा ।

पकड़ – नि॒ रे ग रे सा, प म॑, ग, रे, सा ।

राग यमन : ताल–त्रिताल : मसीतखानी गत

9	10	11	12	13	14	15	16	1	2	3	4	5	6	7	8
–	–	–	नि॒रेगम॑	रे	सासा	नि॒ध॒	नि॒रे	ग	–	–	रेरे	ग	म॑म॑	प	म॑
–	–	–	दिरदिर	दा	दिर	दिर	दिर	दा	–	–	दिर	दा	दिर	दा	रा
ग	रे	सा	गग	रे	गग	म॑	ध	नि	धध	प	पप	म॑	गग	रे	रे
दा	दा	रा	दिर	दा	दिर	दा	रा	दा	दिर	दा	दिर	दा	दिर	दा	रा
ध॒	नि॒	सा													
दा	दा	रा													
0				3				×			2				

अन्तरा

9	10	11	12	13	14	15	16	1	2	3	4	5	6	7	8
			पप	म॑	गग	म॑	ध	सां	सां	सां	निनि	रें	गंगं	रें	सां
			दिर	दा	दिर	दा	रा	दा	दा	रा	दिर	दा	दिर	दा	रा
नि	धध	प	पप	सां	रेंरें	नि	ध	नि	ध	प	पप	म॑	रेरे	ग	रे
दा	दिर	दा	दिर	दा	दिर	दा	रा	दा	दा	रा	दिर	दा	दिर	दा	रा
ध॒	नि॒	सा॒	नि॒रेगम॑												
दा	रा	दा	दिरदिर												
0				3					×			2			

राग यमन : ताल त्रिताल : द्रुत गत – स्थायी

9	10	11	12	13	14	15	16	1	2	3	4	5	6	7	8
–	ध॒	नि॒	रे	ग	–	ग	रे	गग	म॑म॑	पप	म॑म॑	ग–	गरे	–रे	सा–
–	दा	रा	दा	दा	रा	दा	रा	दिर	दिर	दिर	दिर	दाऽ	रदा	ऽर	दा
–	ध॒	नि॒	रे	ग	–	ग	रे	ग	म॑म॑	धध	निनि	ध–	धप	–प	मग
ऽ	दा	रा	दा	दा	ऽ	दा	रा	दा	दिर	दिर	दिर	दाऽ	रदा	ऽर	दाऽ
–	ध॒	नि॒	रे												
ऽ	दा	रा	दा												
0				3				×				2			

अन्तरा

13	14	15	16	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
				ग	मंमं	प	ध	नि	निनि	सां	–	नि	रेंरें	गंगं	रेंरें
				दा	दिर	दा	रा	दा	दिर	दा	रा	दा	दिर	दिर	दिर
सां	निनि	ध	प	सां	निनि	सां	–	निनि	धध	पप	मं	ग–	गरे	–रे	सा–
दा	दिर	दा	रा	दा	दिर	दा	रा	दिर	दिर	दिर	दा	दाऽ	रदा	ऽदा	दा–
–	ध़	नि़	रे												
ऽ	दा	रा	दा												
3				×				2				0			

राग भैरव

राग वर्णन

दोहा– ध– रि वादी – संवादी करि रि–ध कोमल स्वर मान।
प्रातः समय नीको लागे भैरव राग महान।।

राग : भैरव
थाट : भैरव (अपने नाम वाले थाट से उत्पन्न)
जाति : सम्पूर्ण – सम्पूर्ण
वादी स्वर : धैवत (ध)
संवादी स्वर : रिषभ (रे)
गायन वादन समय : प्रातः काल
कोमल : रे और ध
प्रकृति : गम्भीर

डॉ. एन. राजम्
वायलिन वादिका

विशेषताएँ–

1.राग भैरव अत्यन्त प्राचीन और गंभीर राग है।
2.इसकी उत्पत्ति भैरव थाट से है, इसलिये ये अपने थाट का आश्रय राग कहलाता है।
3.ये प्रातः कालीन संधिप्रकाश राग है। अतः इसे प्रातः चार से सात बजे के बीच गाया बजाया जाता है।
4.इस राग की प्रकृति गंभीर होने के कारण इसमें ध्रुपद धमार, मसीतखानी एवं रज़ाखानी गत एवं ख्याल गाया बजाया जाता है।
5.इस राग में रे और ध को आंदोलित किया जाता है।
जैसे–ग म रे ऽ रे ऽ सा

ग म मध़ ऽ ध़ ऽ प।

6.अवरोह में बहुधा गंधार स्वर को वक्र कर दिया जाता है।

जैसे–म प ग म रे़ ऽ रे़ ऽ सा।

न्यास के स्वर–सा, रे प और ध

समप्राकृतिक राग –कालिंगड़ा, रामकली।

आरोह –सा रे़ ग म, प ध़ नि सां।

अवरोह –सां नि ध़ प, म ग, रे़ सा।

पकड़ –ग म ध़ ऽ ध़ ऽ प, ग (म) रे़ ऽ रे़ ऽ सा।

पं. राम नारायण
सारंगी वादक

राग– भैरव
ताल– त्रिताल
रज़ाखानी गत (द्रुत)

9	10	11	12	13	14	15	16	1	2	3	4	5	6	7	8
ध	धध़	प	ध़	म	पप	ग	म	रे़	–	ग	म	रे़	रेरे़	सा	–
दा	दिर	दा	रा	दा	दिर	दा	रा	दा	ऽ	दा	रा	दा	दिर	दा	रा
सा	रेरे़	ग	म	प	धध़	नि	सां	धध़	पप	गग	मम	गऽ	गरे़	ऽरे़	सा–
दा	दिर	दा	रा	दा	दिर	दा	ऽ	दिर	दिर	दिर	दिर	दाऽ	रदा	ऽर	दाऽ
0				3				×				2			

अन्तरा

9	10	11	12	13	14	15	16	1	2	3	4	5	6	7	8
म	पप	ग	म	ध़	–	नि	सां	सां	–	सांसां	सां–	सां	रेंरें	सां	–
दा	दिर	दा	रा	दा	रा	दा	रा	दा	ऽ	दिर	दिर	दा	दिर	दा	रा
सां	रेंरें	गं	रें	सां	निनि	सां	–	सांसां	निनि	धध़	पप	ग–	मरे	–रे़	सा–
दा	दिर	दा	रा	दा	दिर	दा	रा	दिर	दिर	दिर	दिर	दाऽ	रदा	ऽर	दाऽ
0				3				×				2			

राग देस

अब्दुल हलीम ज़ाफर खां
सुर बहार वादक

दोहा –

वादी रे, संवादी प, दोऊ निषाद लग जायें।
औडव संपूरण सुधर, देस राग की गायें
अथवा
औडव संपूरन राग में, दो निषाद का योग।
थाट खमाज द्वितीय रात्रि, रे प का संयोग।।

राग विवरण –यह राग खमाज थाट से उत्पन्न हुआ है। अथवा खमाज अंग का राग है।
इस राग के आरोह में ग और ध वर्जित है एवं अवरोह संपूर्ण है।
इस राग में दोनों निषाद का प्रयोग होता है, आरोह में शुद्वनि तथा अवरोह में कोमल नि।
राग का वादी स्वर रे तथा संवादी स्वर प है। इस राग के गायन वादन का समय रात्रि का द्वितीय प्रहर है।

विशेषताएँ

1. यह चंचल प्रकृति का राग है।
2. इस राग का स्वरूप सोरठ नामक राग से बहुत मिलता जुलता हैं।
3. इस राग में रज़ाखानी, छोटाख्याल, तथा ठुमरी गाई व बजाई जाती।
4. यह राग बहुत लोकप्रिय राग है।
5. इस राग में 'ध म' स्वरों की संगति बार– बार सुनाई देती है, इसलिये अवरोह में अधिकतर 'प' को अल्प कर 'ध म' स्वरों का प्रयोग किया जाता है।
   जैसे–<u>नि</u> ध प, ध म ग रे
6. यह राग अवरोह में अधिक स्पष्ट होता है।
7. इस राग के अवरोह में रे वक्र रूप से लेते है,
   जैसे म ग रे ऽ ग ऽ नि़ सा।
8. यह राग मारवाड़ तथा जयपुर की तरफ बहुत ही सुन्दरता के साथ गाया– बजाया जाता है।

न्यास के स्वर	–	सा रे और प
मिलते जुलते राग	–	सोरठ व तिलक कामोद।
आरोह	–	सा, रे, म, प, नि, सां।
अवरोह	–	सां <u>नि</u> ध प, म ग रे, ग नि ऽ सा।
पकड़	–	रे म प, <u>नि</u> ध प, प ध प म, ग रे ग, नि़ सा।

राग– देस

ताल– त्रिताल

रजा़खानी गत (द्रुत)

प	निनि	सांसां	रेंरें	नि–	धध	प	ध	मम	गग	रेरे	सासा	रे	मम	प	–
दा	दिर	दिर	दिर	दाऽ	दिर	दा	रा	दिर	दिर	दिर	दिर	दा	दिर	दा	रा
म	मम	ग	रे	ग	गनि़	नि़	सा–	रे	मम	प	ध	निऽ	निध	ऽध	प
दा	दिर	दा	रा	दा	रदि	ऽर	दा	दा	दिर	दा	रा	दाऽ	रदा	ऽर	दा
0				3				×				2			

अन्तरा

म	मम	पप	निनि	सां	निनि	सां	सां	निनि	सांसां	रेंरें	सां–	निऽ	निध	ऽध	प–
दा	दिर	दिर	दिर	दा	दिर	दा	रा	दिर	दिर	दिर	दिर	दाऽ	रदा	ऽर	दाऽ
सां	निनि	सां	रें	नि	धध	प	ध	मम	गग	रेरे	सासा	रे	मम	प	प
दा	दिर	दा	रा	दा	दिर	दा	रा	दिर	दिर	दिर	दिर	दा	दिर	दा	रा
0				3				×				2			

राग देशकार

दोहा–

जबहि बिलावल मेल सों,म–नि सुर दिये निकाल।
ध– ग वादि– संवादि ते,औडव देशीकार।।

राग विवरण

यह राग बिलावल थाट से उत्पन्न एक लोकप्रिय राग है। इस राग में मध्यम (म) एवं निषाद पूर्णतया वर्जित है। अतः इसकी जाति औडव– औडव है। वादी स्वर 'ध' और संवादी स्वर 'ग' है। इसका गायन वादन समय दिन का दूसरा प्रहर है। सभी स्वर शुद्व लगते है।

पं. शिव कुमार शर्मा
संतूर वादक

विशेषताएँ–

1.इसका समप्रकृति राग भूपाली है। भूपाली में भी म– नी वर्जित है। परन्तु ग्रह– अंशादो में स्वर संगति आदि के कारण दोनो राग एक दूसरे से भिन्न हो जाते है।

2.यह राग उत्तरांग प्रधान है।

3.इस राग की चलन मध्य और तार सप्तक में ही होती है।

4.राग भूपाली में पंचम में ठहरते ही वहॉ देशकार दिखने लगता है।

5.देशकार में पंचम का प्रयोग अधिक एवं तार सप्तक की ओर जाना चाहिये।

6.न्यास के स्वर —प, ध और तार सां
समप्रकृति राग —भूपाली और जैत कल्याण।
विशेष स्वर संगति —ग प, ध प ध ऽ प,
प ध सां प ध
सां, ध प ध।
आरोह —सा, रे, ग प, ध सां।
अवरोह —सां, ध, प, ग प ध प, ग रे सा।
पकड़ —सां ध, प, ग प, ध प ग रे सा।

राग– देशकार
ताल– त्रिताल
रज़ाखानी गत (द्रुत) स्थायी

ध	सांसां	ध	प	ध	धध	प	प	ग	पप	धध	पप	ग	रे	सा	–
दा	दिर	दा	रा	दा	दिर	दा	रा	दा	दिर	दिर	दिर	दा	रा	दा	ऽ
सा	रे	ग	पप	रे	ग	प	धध	ध	सांसां	ध	प	सारे	गग	रेग	पप
दा	रा	दा	दिर	दा	रा	दा	दिर	दा	दिर	दा	रा	दिर	दिर	दिर	दिर
0				3				X				2			

अन्तरा

ग	प	ध	सां	प	धध	सां	–	सां	पप	ध	सां	ध	रेंरें	सा	–
दा	रा	दा	रा	दा	दिर	दा	रा	दा	दिर	दा	रा	दा	दिर	दा	रा
ध	ध	रें	सां	गं	रेंरें	सां	–	सांसां	धप	धध	पग	सारे	गग	रेग	पप
दा	रा	दा	रा	दा	दिर	दा	रा	दिर	दिर	दिर	दिर	दिर	दिर	दिर	दिर
0				3				X				2			

राग बागेश्री

दोहा :

तीवर रि ध कोमल ग म नि मध्यम वादी बखानी।
खरज जहां संवादी है,बागेसरी लखानी।।
– ''रागचन्द्रिका सार''

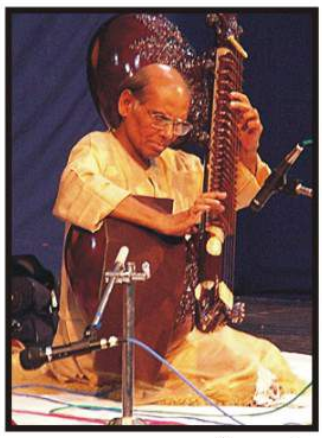

उ. असद अली खां
रुद्र वीणा वादक

राग विवरण

यह राग काफी थाट से उत्पन्न राग है। इस राग में ग और नि स्वर कोमल लगते है। इस राग का वादी स्वर मध्यम और संवादी षडज है। इस राग का

गायन– वादन समय रात्रि का दूसरा प्रहर है। इसके आरोह में रे और प वर्ज्य है।
अवरोह में सातों स्वर का प्रयोग होता है। इस राग की जाति के विषय में मतभेद है। कुछ संगीतज्ञ इसें षाडव सम्पूर्ण और अधिकांश विद्वान इसे औडव सम्पूर्ण जाति का राग मानते है।

विशेषताएँ–

1.मध्यम, धैवत और निषाद स्वर की संगति इस राग की शोभा बढ़ाती है।
2.अवरोह में पंचम का प्रयोग वक्र रूप में होता हैं जैसे– सां नि़ ध, म प ध,
3.ग नि कोमल के साथ अन्य स्वर शुद्व ही प्रयोग में आते है।
4.कोई– कोई गुणीजन पंचम बिल्कुल वर्ज्य करते है।
5.राग– विवरण के अन्तर्गत आरोह में रे स्वर वर्ज्य माना गया है। किन्तु कभी– कभी इसका प्रयोग करते समय म तक जाकर लौट जाते है। जैसे – (1) म ग रे ग़ ऽ (2) रे ग़ म ग़ ऽ रे सा
6.यह राग ख्याल, ध्रुपद, मसीतखानी, रजाखानी तराना के उपयुक्त है।

न्यास के स्वर	–	सा, ग और प
समप्रकृति राग	–	भीमपलासी
आरोह	–	सा नि़ ध़ नि़ सा, म ग़ म ध नि़ सां
अवरोह	–	सां नि़ ध, म ग़ म ग़ रे सा
पकड़	–	सा नि़ ध़ सा, म ग़, म ध, नि़ ध, म ग़ म ग़ रे सा।

राग बागे श्री
ताल– त्रिताल
रजा़खानी गत (द्रुत)
स्थायी

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
						गग	मम	ग़–	गरे	–रे	सा–	ग	मम	ध	नि़
						दिर	दिर	दाऽ	रदा	ऽर	दाऽ	दा	दिर	दा	रा
ध	–	–	सांसां	नि़	ध	गग	मम	ग़–	गरे	–रे	सा–	नि़	सासा	ध़	नि़
दा	ऽ	ऽ	दिर	दा	रा	दिर	दिर	दाऽ	रदा	ऽर	दाऽ	दा	दिर	दा	रा
सा	–	–	ग़म	म	म	गग	मम								
दा	ऽ	ऽ	दिर	दा	रा	दिर	दिर								
×				2				0				3			

अन्तरा

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
								ग	मम	धध	निनि	सां	सांसां	सां	सां
								दा	दिर	दिर	दिर	दा	दिर	दा	रा
नि	सांसां	रेंरें	सांसां	नि–सांध		–नि	सां–	ध	नि	सांनि	धध	म	ध	निध	म
दा	दिर	दिर	दिर	दाऽ	रदा	ऽर	दाऽ	दा	रा	दिर	दिर	दा	रा	दिर	दिर
पध	मग	रेसा	धनि	सा	सा	गग	मम								
दिर	दिर	दिर	दिर	दा	रा	दिर	दिर								
×				2				0				3			

अभ्यासार्थ प्रश्न

लघुत्तरीय प्रश्न

प्र.1 राग बागेश्री में कौन से स्वर कोमल प्रयोग में आते हैं।

प्र. 2 जिस राग में रे और धा कोमल हो वह कौन सा राग है।

प्र. 3 राग देशकार की जाति क्या है।

प्र. 4 राग देस के आरोह में शुद्ध नि तथा अवरोह में कौनसा नि प्रयोग में आता है।

निबन्धात्मक प्रश्न

प्र. 1 राग यमन,भैरव,देस,देशकार तथा बागेश्री का शास्त्रीय परिचय मय दोहा आरोह अवरोह पकड लिखें ।

प्र. 2 पाठयक्रम से किसी राग की बिलंबित गत को ताल लिपि में बद्व करें ।

प्र. 3 पाठयक्रम से कोई दो रागों की रजाखानी गत को तालिपि में बद्व करें ।

उ. अल्लाउद्दीन खां
पं. रविशंकर एवं निखिल बनर्जी के गुरु

प्रस्तुत अध्याय में विद्यार्थियों हेतु प्रख्यात संगीतज्ञों के चित्र दिये गए है जो सांगीतिक ज्ञानवर्धन तथा प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी हेतु अत्यंत महत्वपूर्ण है।